MYFAYTH.COM

रामचन्द्र जी आरती : सुभग सिंहासन आप बिराजैं

सुभग सिंहासन आप बिराजैं । वाम भाग वैदेही राजैं ॥
कर जोरे रिपुहन हनुमाना । भरत लखन सेवत बिधि नाना ॥

शिव अज नारद गुन गन गावैं । निगम नेति कह पार न पावैं ॥
नाम प्रभाव सकल जग जानैं । शेष महेश गनेस बखानैं

भगत कामतरू पूरणकामा । दया क्षमा करूना गुन धामा ॥
सुग्रीवहुँ को कपिपति कीन्हा । राज विभीषन को प्रभु दीन्हा ॥

खेल खेल महु सिंधु बधाये । लोक सकल अनुपम यश छाये ॥
दुर्गम गढ़ लंका पति मारे । सुर नर मुनि सबके भय टारे ॥

देवन थापि सुजस विस्तारे । कोटिक दीन मलीन उधारे ॥
कपि केवट खग निसचर केरे । करि करूना दुःख दोष निवेरे ॥

देत सदा दासन्ह को माना । जगतपूज भे कपि हनुमाना ॥
आरत दीन सदा सत्कारे । तिहुपुर होत राम जयकारे ॥

कौसल्यादि सकल महतारी । दशरथ आदि भगत प्रभु झारी ॥
सुर नर मुनि प्रभु गुन गन गाई । आरति करत बहुत सुख पाई ॥

धूप दीप चन्दन नैवेदा । मन दृढ़ करि नहि कवनव भेदा ॥
राम लला की आरती गावै । राम कृपा अभिमत फल पावै ॥